संरक्षक की कलम से

प्रिय पाठकों,

मुझे आपको यह अवगत कराते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप अपने सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने के लिए वर्ष-भर हिंदी की विभिन्न गतिविधियां आयोजित करता रहता है। इन्हीं गतिविधियों को और मजबूती प्रदान करने में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यद्यपि, हमारे संस्थान की कार्य संस्कृति तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति की है और सामान्यतः इन वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों में हिन्दी का अपेक्षानुरूप प्रयोग कर पाना काफी कठिन होता है, तथापि संस्थान का यह प्रयास रहता है कि अपनी वैज्ञानिक गतिविधियों में भी राजभाषा हिन्दी का यथासंभव प्रयोग किया जाए। यह प्रयास प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के जरिए सुनिश्चित किया जा रहा है।

संस्थान पिछले 19-20 वर्षों से "प्रवाहिनी" नामक वार्षिक हिन्दी पत्रिका का निरन्तर प्रकाशन करता आ रहा है। विद्वत लेखकों के उपयोगी एवं प्रेरणाप्रद लेख हमें इस दिशा में उत्साहपूर्वक आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यद्यपि आज समाज में मनोरंजन एवं ज्ञान-विज्ञान के एक से बढ़कर एक साधन उपलब्ध हैं जिन्होंने आम-आदमी का ध्यान पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों से हटा दिया है, फिर भी हमारा प्रयास है कि सामान्य जनमानस को रोचक एवं उपयोगी पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन की ओर आकर्षित व प्रोत्साहित किया जाए।

आज हमारे समाज में हर जगह जल संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं। कहीं सूखा तो कहीं बाढ़, कहीं गुणवत्ता में कमी तो कहीं जलजनित रोगों में वृद्धि पाई जा रही है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर हमारे संस्थान ने चार वर्ष पूर्व यह निर्णय लिया था कि एक ऐसी पत्रिका प्रकाशित की जाए जिसमें जल से जुड़ी समस्याओं और उनके समाधानों की जानकारियों को समाविष्ट कर इसे आम-आदमी तक पहुंचाया जाए। अतः इसी क्रम में संस्थान ने यह निर्णय लिया कि "प्रवाहिनी" पत्रिका के प्रकाशन के साथ-साथ हिन्दी में एक और ऐसी पत्रिका प्रकाशित की जाए जिसमें जल संबंधी तकनीकी जानकारी, समीक्षाएं, समाचार तथा वर्ग पहेली आदि का समुचित समावेश हो, जिससे तकनीकी एवं वैज्ञानिक कार्यों में भी राजभाषा हिन्दी को व्यापक प्रोत्साहन मिल सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए संस्थान सितम्बर 2011 से "जल चेतना" नामक इस पत्रिका का निरंतर प्रकाशन कर रहा है।

"जल चेतना" पत्रिका के जुलाई 2014 अंक को समस्त सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। आशा है कि यह अंक समस्त पाठकों को रुचिकर तथा उपयोगी लगेगा।

मैं उन समस्त प्रबुद्ध लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक एवं महत्वपूर्ण लेख भेजकर इसके प्रकाशन में अपेक्षित सहयोग दिया है। पत्रिका का सम्पादन मंडल भी हार्दिक बधाई का पात्र है।

मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

राजदेव सिंह

(राजदेव सिंह)

निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

National Institute of Hydrology

(जल संसाधन मंत्रालय के अधीन भारत सरकार की समिति)
(Government of India Society under Ministry of Water Resources)

जलविज्ञान भवन
Jalvigyan Bhawan

रुड़की – 247 667, भारत
Roorkee - 247 667, INDIA